कलीसिया परिशिष्ट 11

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]

उत्तम योजनाएं बनाना

परिचय। सर्वप्रथम मसीही कलीसिया एक जीव है जो ऐसे लोगों से मिलकर बना समूह जिनमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है। लेकिन इस समाज को अन्य सामान्य संगठनों के जैसे ही काम करना चाहिए(1कुरिन्थियों 14:33.40)। इसलिए मसीहियों को योजना बनाने, आयोजन करने, अगुवाई और समीक्षा करने को गम्भीरता से लेना चाहिए।

क. अच्छी योजनाएं

1. अच्छी योजनाएं बनाने का कारण।

अच्छी योजनाओं का उत्तम परिणाम होता है(नीतिवचन 21:5)।
अच्छी योजनाओं के परिणाम स्वरूप दूसरों के साथ हमारे बेहतर रिश्ते बनते है(नीतिवचन 14:22)।
अच्छी योजनाओं के परिणाम स्वरूप परमेश्वर के साथ हमारा उत्तम रिश्ता बनता है(यशायाह 30:1-2)

2. अच्छी योजनाएं बनाने के लिए आवश्यक चीजें।

(1) अच्छी योजना बनाने के लिए सही समय पर कठिन परिश्रम करने की ज़रूरत होती है।

- जो काम में ढिलाई करता है वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं। जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करने वाला है, परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है वह लज्जा का कारण होता है(नीतिवचन 10:4-5;20:4;28:19; 30:25)।
- कल के दिन के विषय में डींग मत मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा(नीतिवचन 27:1)।

(2) योजना बनाने के लिए अच्छे सलाहकारों की आवश्यकता होती है।

- जहां बुद्धि की युथ्क्त नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है, परन्तु सम्मति देने वालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है(नीतिवचन 11:14)।
- बिना सम्मति की कल्पनाए निष्फल हुआ करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है (नीतिवचन 19:20)।
- सम्मति को सुन ले और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे (नीतिवचन 19:20)।
- सब कल्पनाएं सम्मति से ही स्थिर होती हैं, और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिए (नीतिवचन 20:18)।

(3) योजना में प्रार्थना शामिल होती है।

- अपने कामों को यहोवा पर डाल दे,इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी (नीतिवचन 16:3)।
- मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ों तो पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा (मत्ती 7:7)।
- तुम्हारे पास है नहीं, क्योंकि तुम ने कभी मांगा नहीं (याकूब 4:2)।

(4) योजना बनाने में परमेश्वर की प्रधानता के प्रति प्रतिबद्धता शामिल होती है।

- मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है(नीतिवचन 16:9)।
- ऐसा भी मार्ग हैं जो मनुष्य को सीधा ही जान पड़ता है परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है(नीतिवचन 16:25)।

- मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती है, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है वही स्थिर रहती है (नीतिवचन 19:21)।
- युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार तो होता है परन्तु जय यहोवा से ही मिलती है (नीतिवचन 21:31)।

(5) योजना बनानें में प्राथमिकता तय करना शामिल होता है।

- अपना बाहर का कामकाज ठीक करना,और खेत का काम तैयार कर लेना(यह बहुत जरूरी काम हैं और इसे स्थगित नहीं किया जा सकता); और उसके बाद अपना घर तैयार करना(कम जरूरी काम है क्योंकि इसे स्थगित किया जा सकता है।)(नीतिवचन 24:27)।
- जो आज्ञा को मानता है वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है(सभोपदेशक 8:5-6)।
- और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से , और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।(मरकुस 12:30-31)।

(6) योजना बनाने में जानकारियों को एकत्र करना शामिल होता है।

- तब मैंने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया; हां मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की (नीतिवचन 24:32)।
- परमेश्वर की महिमा , गुप्त रखने में हैं, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है(नीतिवचन 25:2)।
- अपनी भेड़ों की दशा भली भांति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर (नीतिवचन 27:23)।
- जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है (नीतिवचन 29:18)।

(7) योजना बनाने में विश्वासयोग्यता की जरूरत होती है।

- जो अंजीर के पेड़ ही रक्षा करता है वह उसका फल खाता है, इसी रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता है उसकी महिमा होती है (नीतिवचन 27:18)।

(8) योजना में एक क्रम का होना जरूरी है।

- नीतिवचन 28:2। देश में पाप होने के कारण उसके हाकिम बदलते जाते हैं; परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिनों के लिए बना रहेगा।
- नीतिवचन 30:27। टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तौभी वे सब की सब दल बांध बांधकर चलती हैं।
- 1 कुरिन्थियों 14:33। क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं वरन शान्ति का परमेश्वर है।
- 1 कुरिन्थियों 14:40। पर सारी बातें शालीनता और व्यसस्थित रूप से की जाएं।

3. एक अच्छी योजना की विषय वस्तु।

गेट=लक्ष्य, गतिविधियां, समय सारणी और मूल्यांकन

एक अच्छी योजना में लक्ष्य, गतिविधियां, समय सारणी(गतिविधी+समय सारणी=कार्यक्रम) जैसे तत्व शामिल होते हैं, और इसे एक संगठन के भीतर उसके अगुवों,सह-कर्मियों,योजनाओं,नियमों, प्राथममिकताओं और सीमित स्रोतों के साथ कार्यान्वित की जानी चाहिए।

आप किस प्रकार से एक योजना को बनाते हैं? आप अकेले या समूह के साथ मिलकर योजना बना सकते हैं?

(1) तथ्यों और जानकारियों को एकत्र करें। तथ्य आपको बताते हैं कि आपका सन्दर्भ क्या है।
(2) एक लक्ष्य निर्धाति करें। आपके लक्ष्य आपको बताते हैं कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं। इसके लिए आपको कुछ निर्णय लेने की ज़रूरत होती है।
(3) गतिविधियां तैयार करें। गतिविधियां दर्शाती हैं कि आप किस तरह से अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहते हैं।
(4) एक समय सारणी (कार्यक्रम)तैयार करें। समय सारणी आपको बताती है कि आप कब इस लक्ष्य को पूरा करने जा रहे हैं।
(5) लोगों को व्यवस्थित करें। एक संगठन आपको बता है कि कौन, किस काम के लिए जिम्मेदार है।

ख. एक योजना बनाना

1. तथ्यों को एकत्र करना।

एक लक्ष्य निर्धारित करने के लिए आपको एक निम्नलिखित क्षेत्र में तथ्यों व जानकारियों को एकत्र करना होता है।

(1) परमेश्वर की अगुवाई ।

परमेश्वर बाइबल व अपनी आत्मा के द्वारा जगत के मसीहियों और व्यक्तिगत तौर पर आपसे क्या कहता है?
व्याख्या: योजना बनाते समय परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त करना बहुत जरूरी है। अगर आपकी योजनाएं परमेश्वर की योजनाओं (लक्ष्यों,आदेशों और इच्छाओं)पर आधारित नहीं है तो वे सफल नहीं हो सकती। वह हर एक जन व हर एक परिस्थिति पर नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है(अय्यूब 42:2-3; भजन 33:11; नीतिवचन 16:9; 19:21;20:24; 212:30; यशायाह 8:10; 14:24-27;25:1; 40:8; 46:10-11; 48:14; 55:11; यिर्मयाह 1:11; प्रकाशितवाक्य 3:7-8)

(2) आपकी कलीसिया का लक्ष्य।

आपकी कलीसिया या सगंठन का लक्ष्य क्या है?
व्याख्या: आपकी योजना आपकी कलीसिया के दर्शन में उपयुक्त बैठना चाहिये।

(3) प्रगति।

अभी तक आपने क्या हासिल कर लिया है? आपने पिछले वर्ष क्या उन्नति की(1तीमुथियुस 4:15)।
व्याख्या: यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आपकी योजना आपके व्यक्तित्व व आपकी सेवकाई में ही निहित हो।

(4) सीखे जाने वाले सबक।

आप अपने पुराने अनुभवों,सफलताओं, असफलताओं और गलतियों से आप क्या शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं?(नीतिवचन 24:32)। उसके कारणों पर विचार करें।
व्याख्या: यदि मान्य हो, तो जो कुछ आपने बीते समय में सीखा है उसे अपनी नयी योजनाओं में इस्तेमाल करें। इस काम और अधिक प्रभावशाली बनता है।

(5) संस्कृति।

जिन जगहों पर आप अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करना चाहते हैं वहां की संस्कृति कैसी है।

---

[1] निर्णन लेने की प्रक्रिया को देखने का अन्य तीन कदमों वाला तरीका:
विचार से जुड़े तथ्यों और जानकारियों को एकत्र करना
एक विचार या मत का निर्माण करना (जानकारियों को आधार पर एक नतीजे पर पहुंचना)
एक निर्णय लेना (तथ्यों के आधार पर एक चुनाव करना)

व्याख्या: आप समूह के जिन लोगों तक पहुंचना और उन्हें प्रभावित करना चाहते हैं उनकी विशेषताओं पर अध्ययन करें। उनका दृष्टिकोण, विश्वास, अन्धविश्वास, मान, शर्तें, आदतें (व्यवस्थाविवरण 18:9-13; मत्ती 15:1-9), ताकि आप इन लोगों को अपने ध्यान में रखते हुए योजनाओं को बना सकें। उनकी कलीसिया का कौन सा पहलू उचित नहीं है और किसे बदला जाना चाहिए?

(6) जरूरतें।

आप लोगों, अपने सहकर्मियों और अपनी किन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं(नीतिवचन 27:23;यिर्मयाह 12:10-11; जर्कयाह 10:2-3;11:15-17;मत्ती 9:36)(पढ़ें यिर्मयाह 23:1-40; यहेजकेल 34:1-25)।
व्याख्या: उनकी जरूरतों की एक सूची तैयार करें जिसे आप उनको लिख सकें।

(7) सम्भावनाएं(अवसर)।

परमेश्वर आपके सामने किसी प्रकार की सम्भावनाएं रखते तथा द्वार खोलते हैं? (प्रेरितों 14:27; 1कुरिन्थियों 16:9; 2कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों 4:3)।
व्याख्या: परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज करें(मैनुएल4, अध्याय 43)।

(8) अवरोधक(समस्याएं)।

आप किस प्रकार की कठिनाईयों,समस्याओं, रूकावटों का सामना कर रहे हैं?(प्रेरितों 16:6-7;2 कुरिन्थियों 11:28; 1थिस्लुनिकियों 2:14,15,18)।
व्याख्या: समस्याएं और रूकावटें परमेश्वर की ओर से होती है, लेकिन ये शैतान की ओर से भी आ सकती हैं। उन पर ध्यान दें,उनके लिए प्रार्थना करें और होने दें कि परमेश्वर का प्रकाश उन पर पढ़े।

(9) माध्यम।

आपके पास कौन से स्रोत या माध्यम उपलब्ध है?
व्याख्या: सम्भव माध्यम या स्रोत हैं: लोग(सहकर्मी),उनका उपलब्ध समय(फिलिप्पियों 2:19-23),सेवा करने के लिए उपलब्ध स्थान(प्रेरितों 19:90) सामग्री,धन(फिलिप्पियों 4:15-16),प्रार्थना का समर्थन (कुलुस्सियों 4:2-4)।

(10) कोशल।

आपके सहकर्मियों और जिन लोगों को आप प्रभावित करना चाहते हैं उनके कौशल क्या हैं?
व्याख्या: उदारहण के लिए : उनके स्वाभाविक गुण,आत्मिक वरदान, उनकी ताकत,उनकी कमज़ोरीयां,विश्वास इत्यादि।

(11) कीमत।

इनकी कीमत क्या है (लूका 14:28-30)?
व्याख्या: कीमत को समय के (2 कुरिन्थियों 11:27), ताकत, अपने इनकार, पैसों और सामग्री, कार्यक्रम और कार्यकर्ताओं की तैयारी, सम्भव विरोध के द्वारा (2 तीमुथीयुस 3:12) नापा जा सकता है।

(12) सलाह।

निम्नलिखित लोग आपको क्या सलाह देते हैं: आपके अगुवे, अन्य परमेश्वर का भय मानने वाले बुद्धिमान लोग, या जिन लोगों ने समान कामों के किया हो?
व्याख्या : आप केवल उपरोक्त अनुसंधान करने के बाद ही किसी से सलाह मांगे।

2. निर्णय लें।

(1) नये विचारों के लिए दिमाग लड़ाएं।

दिमाग लड़ाने का अर्थ नये विचार की खोज करने के लिए की जाने वाली चर्चा है।

अपने कार्यकर्ताओं के साथ, वरन अपने अगुवों, सलाहकारों और जीवन साथी और बच्चों के साथ विचार-विमर्श करें।

(2) खुले विचारो के साथ आपसे में बातचीत करें।

- एक दूसरे के साथ खुले माहौल में बातचीत करें।
- सारे वैकल्पिक विचारों, रास्तों और तरीकों को तौलें।
- प्रतिक्रियाओं और प्रश्नों को ध्यान से सुनें।
- एक दूसरे के मकसद को जानने का प्रयास करें।
- अपने निर्णयों और कामों के वास्तविक और काल्पनिक परिणामों के बारे में विचार करें। यशायाह 47:7
- "सम्भावित परिणामों पर चिन्तन करें।"
- हर एक विचार को परमेश्वर के वचनों से परखें। सारे निर्णय और योजनाए बाइबल पर आधारित होनी चाहिए।
- हर एक विषय के लिए मन लगाकर प्रार्थना करें।
- प्रस्तावित निर्णयों के बारे में प्रार्थनो व विचार करने के लिए शामिल हुए हर एक जन को समय दें(जैसे कि पत्नी, बच्चे,दल के सदस्य इत्यादि)।

(3) निर्णय लेना।

- जितना सम्भव हो सहकर्मियों के दल के साथ,प्राचीनों के समीती या अपनी मण्डली के साथ मिलकर में निर्णय लें।
- सर्वसम्मति से निर्णय लेने का प्रयास करें (प्रेरितों 15:28) लेकिन मतदान के द्वारा नहीं ।
  -कलीसिया कोई निरंकुशता नहीं है, जहां पासबान ही सारे निर्णयों को लेता हो।
  -न ही कलीसिया कोई लोक तन्त्र है जहां पर कलीसिया के सदस्य अधिक संख्या में मत डालकर अपनी इच्छा को जबरजस्ती मनवा लें।
  -परन्तु मसीही कलीसिया एक मसीह तन्त्र है जहां मसीह की इच्छाओं और योजनाओं को पवित्र आत्मा, बाइबल (सही मतलब बताते हुए), प्राचीनों की परिषद और कलीसिया के सदस्यों द्वारा पूरा किया जाता है।
- बुद्धिमान प्राचीनों की पीठ जितना सम्भव होगा कलीसिया के सदस्यों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा शामिल करने का प्रयास करेगी (प्रेरितों 1:21-23; प्रेरितों 6:2-3; प्रेरितों 15:4,22-29; 1तीमुथीयुस 3:14-15)! ये "निर्णय" वैसे निर्णय नहीं थे जिनका पालन करना सबके लिए अनिवार्य हो, वरन यह एक सलाह के तौर पर दिया जाने वाला निर्णय था (प्रेरितों 16:4)। इस तरह से निर्णय: (1)गैर यहूदियों से मसीहियत में आये हुए लोगों के लिए खतना कराना अनिवार्य करके परिस्थिति को मुश्किल बनाने वाले नहीं थे, (2) और न ही गैर मसीहियों से यह निवेदन किया जा रहा था कि वे गला घोंटकर मारे गये जानवरों का मांस खाकर मसीही बने यहूदियो पर गुस्सा न करें (रोमियों 14) और (3)यौन अनैतिकता को नज़रअन्दाज़ करें।
- समूह के अगुवे को कुछ निर्णय अकेले ही लेने होगें। ऐसी परिस्थितियों में अगुवा ही निर्णय के लिए ज़िम्मेदार व उत्तरदायी ठहरेगा।

(4) अपने लक्ष्यों को निर्धाति करने से पहले महत्वपूर्ण निर्णय(एक मूल्यांकन सूची)।

- बाइबल का मकसद। आपकी योजना में बाइबल का क्या मकसद छुपा हुआ है?
  व्याख्या: उदाहरण के लिए बाइबल में एक आज्ञा या शिक्षा।
- अपेक्षा। आप परमेश्वर से क्या करवाना चाहते हैं?
- प्रभाव। आप लोगों पर किस तरह का प्रभाव डालना चाहते हैं?
- आपकी सेवाकाई का दर्शन। वे कौन सी शिक्षाएं या सिद्धान्त हैं जिस पर आपको व्यवहार आधारित है?

व्याख्या: ये शिक्षाएं या सिंद्धान्त आपकी सेवाकाई को दिशा प्रदान करते हैं जैसे कि ,चेलों, मज़दूरों और अगुवों की संख्या में बढ़ोतरी।

- आपकी सेवाकाई की रणनीति। आपका तरीका क्या है? आपकी कार्य शैली क्या होने जा रही है?
  व्याख्या: आपकी यह कार्य शैली, आपका सबसे महत्वपूर्ण कार्य है,उदाहरण के लिए छोटे समूहों और व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा।
- योजना। आपकी योजनाएं क्या हैं?
  व्याख्या: ये आपके लक्ष्य और कार्यक्रम हैं(गतिविधियां व समय सारणी)।
- संगठन। आपके संगठन की संरचना क्या है?
  व्याख्या: कौन किसके लिए और किस कारण से और किसी प्रति जिम्मेदार है?
- सम्बन्ध। आपका अपनी कलीसिया व दूसरी कलीसिया के सदस्यों के साथ में कैसा सम्बन्ध है?
  व्याख्या: अपनी कलीसिया या संगठन में अपनी योजना और उस योजना को कार्यान्वित करने के लिए स्थान को निर्धारित करें।
- शैली। आपकी सेवाकाई की शैली, लहजा, और गति क्या है?
  व्याख्या: अपनी अगुवाई की शैली के बारे में विचार करें।

उपरोक्त सभी निर्णयों को निर्धारित करने के बाद आप अपने लक्ष्यों को लिख सकते हैं।

3. लक्ष्य निर्धारित करें।

(1) एक लक्ष्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं(मूल्यांकन सूची)।

- परमेश्वर की बुलाहट या चुनौति। परमेश्वर आपसे क्या करवाना चाहता है? परमेश्वर किस कार्य में आपके जीवन को इस्तेमाल करना चाहता है?(यशायाह 30:1-2)।
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर की बुलाहट और चुनौति को प्रगट करता है।
- परमेश्वर की आज्ञाएं व उसकी शिक्षाएं। इस लक्ष्य से सम्बन्धित बाइबल में कौन सी महत्वपूर्ण आज्ञाओं और शिक्षाओं का पालन करने के लिए कहा गया है?(लूका 10:25-28)।
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर की आज्ञा और उसकी शिक्षाओं को प्रगट करता है।
- परमेश्वर का राज्य, कलीसिया और पड़ोसी। परमेश्वर के राज्य, कलीसिया और जिसे संगठन से आप जुड़े हैं उसके लक्ष्य क्या हैं?
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर के राज्य, कलीसिया और अपने पड़ोसी में रूचि दिखाता है।

(2) स्पष्ट लक्ष्यों के कार्य।

लक्ष्य की संरचना ने निम्नलिखित मांगों को पूरा करना चाहिए:

- प्रेरणादायक। आपके लक्ष्य ने आपको स्पष्ट तौर पर बताना चाहिए कि आप जो कर रहें हैं वह 'क्यों' कर रहे हैं।
- चुनाव। लक्ष्य लोगों को अपने प्रति समर्पित होने के लिए कायल करता है।
- सफल। लक्ष्य ने संसाधनों(लोग,धन और समय) की बर्बादी को रोकना और पदभ्रष्टता या गैर-अनिवार्य चीजों को महत्व देने से बचना चाहिए।
- मापने योग्य। लक्ष्य मूल्यांकन करने (समीक्षा) या नियन्त्रण करने का पैमाना तय करता है। इसलिए लक्ष्य पहुंच के दायरे में होने चाहिए और उनके परिणामों को नापा जा सकना चाहिए।

(3) निम्नलिखित विशेषताओं के साथ लक्ष्य की संरचना करें।

लक्ष्य की संरचना:

- संक्षिप्त होनी चाहिए, ताकि उसे याद रखा जा सके।
- स्पष्ट होनी चाहिए, ताकि उसके बारे में लोगों को आसानी से समझाया जा सके।
- वास्तविक होनी चाहिए ताकि उसे हासिल किया जा सके और जिससे समय और संसाधनों की बर्बादी न हो।
- विशिष्ट होनी चाहिए(मापने योग्य) ताकि आप यह जान सकें कि आप अपने लक्ष्य तक पहुंच गये हैं। इसके अलावा वह सभी लोगों को सही मार्ग पर बनाये रखने वाला होना चाहिए ताकि कोई अपने लक्ष्य से न भटके और लोग अपना समय गैर जरूरी चीजों में खराब न करें।
- पारदर्शी होनी चाहिए। यह परिणाम प्रगट करता है क्रिया कलाप नहीं। (चित्रण की शुरूआत: मैंने...से करें)
- प्रेरणादायक हो ताकि लोग काम में लग जाएं और प्रतिभागियों को स्पष्ट तौर पर पता हो कि वे इस कार्य को क्यों कर रहें हैं।
- चुनौतिपूर्ण हो ताकि, उससे विश्वास की बढ़ोतरी और विकास हो।

4. योजना को लिखें

(1) लक्ष्य की संरचना करें।

(2) कार्यों को निर्धारित करें।

क्या काम करने से हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं? आप इस काम को किस तरह करना चाहते हैं?

(3) एक समय सारणी अर्थात कार्यक्रम तैयार करें।

समय सारणी या कार्यक्रम वर्णन करता है कि आप उस कार्य को कब करेगें। वह तिथी, सप्ताह का दिन, दिन में आप कब काम को प्रारम्भ करेगें और कब खत्म करेगें दर्शाता है।

(4) लोगों का सुप्रबन्ध करें। अन्त में लोगों के कार्य-वर्णन या हर एक शामिल व्यक्ति से अपेक्षित जिम्मेदारी को लिख लें, ताकि हर व्यक्ति को यह मालूम रहे कि वह किसके प्रति, किसके लिए और क्या काम करने के लिए जिम्मेदार है।

(5) एक जांच सूची तैयार करें। अपने आप से निम्नलिखित प्रश्न करें:

- किस प्रकार से मैं यीशु मसीह को इस लक्ष्य व कार्यों का केन्द्र बना सकता हूं?
- क्या मैंने कभी दूसरों को सलाह दी है(नीतिवचन 15:22;24:6)?
- क्या मैंने संसाधनों को इस्तेमाल अवसर पढ़ने पर इस तरीके से किया है कि मुझे बेहतर तरीके से लक्ष्य की प्राप्ती हो सके?
- क्या मैंने विकल्प के बारे में सोचा है?
- क्या मैं ने योजना में हर बिन्दु के लिए प्रार्थना (अपने सहायक दल के साथ मिलकर)की है(नीतिवचन 16:3), लोगों में से निर्धारित लोगों के लिए (कुलुस्सियों 4:2-4) और समूह के सदस्यों के लिए(कुलुस्सियों 1:9-12)?
- क्या परमेश्वर ने मेरी योजनाओं को स्वीकृत किया है(यशायाह 30:1-2; 2 कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 15:28)?

ग. योजनाओं को पूरा करना

1. आपने कब योजना को पूरा किया।

'योजना बनाने' को अर्थ अपने संसाधनों को उस काम में लगा देना जिस से आपको खास मकसद पूरा होता हो।

एक योजना पूरी होती है: सुप्रबन्ध, अगुवाई और मूल्यांकन से।
पोल= योजना बनाना, सुप्रबन्ध करना, अगुवाई करना और मूल्यांकन करना

(1) योजना बनाना।

मैं ने अपनी विषय वस्तु को आधार बनाकर योजना को पूरा करने का समय निर्धारित कर दिया है, बहुत से स्पष्ट लक्ष्य व एक कार्यक्रम है जिसके द्वारा उन लक्ष्यों को पूरा किया जा सकता है।

(2) सुप्रबन्ध करना।

मैंने सभी लोगों के लिए यह जानने का इन्तेजाम कर दिया है कि किसके प्रति, किसके लिए और किस वजह से वह जन जिम्मेदार है।

(3) अगुवाई करना।

जब मैं पर्याप्त समय रहते कोई सही निर्णय लेता हूं और इस बात का ध्यान रखता हूं जिस बात को ठाना है वह पूरी हो तो मैं अगुवाई कर रहा हूं।

(4) मूल्यांकन करना (समीक्षा)।

जब मैं तुलना करता हूँ कि मैं ने क्या किया है और मुझे क्या करना चाहिए था, और मैं उनके बीच के अन्तर को समझ पाता हूं तो मैंने सच में मूल्यांकन किया है।

2. शिष्य के लिए एक वर्ष की योजना को उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
मैं ने वर्तमान समूह में 5 लोगों को मसीह का चेला बनाया है।	4 रचनात्मक शिष्यता की नियमावली से ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करें जो शिक्षा को आगे बढ़ा सकें।	इस वर्ष 48 साप्ताहिक अध्याय। हर कक्षा की अवधि 2 से 3 घण्टे की।
मैंने उन्हें परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करके जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित किया है।	नियमित तौर पर एक एक व्यक्ति से व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात करें।	निवेदन करने पर या जरूरत पड़ने पर लेकिन प्रतिमाह कम से कम एक बार
मसीह का अनुकरण करने वाले लोगों के समाज का निर्माण किया है।	सारे छोटे समूहों या घरेलू कलीसियाओं में 12 सभाएं करें।	माह के बीच में 12 मासिक सभाएं।

3. शिष्यता के मैनुएल 1 के अध्याय 3 का एक उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
हम ने मिलकर आराधना की है	विशेषता: परमेश्वर महान और सामर्थी है।	20 मिनट
हमने एक साथ मिलकर शान्त समय साझा किया है।	मत्ती 8:1-11:24	20 मिनट
मैंन एक नई शिष्यता की शिक्षा दी हैं	सुसमाचार के संदेशो को सार	70 मिनट
हम ने मिलकर प्रार्थना की है।	परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना	8 मिनट

मैंने उन्हें एक विशेष काम सौंपा है।	अध्याय 4 के लिए निर्धारित कार्यों को लिखा है।	2 मिनट

3. शिष्यता के मैनुएल 1 के अध्याय 4 का एक उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
हमने एक साथ मिलकर शान्त समय साझा किया है।	मत्ती 11:25-14:36	20मिनट
हमने एक बाइबल पद को याद किया और उस पर मनन किया।	प्रार्थना के उत्तर मिलने का निश्चय यूहन्ना 16:24	20मिनट
हमने मिलकर बाइबल अध्ययन किया है।	5 कदमों का तरीका मैं कहां से आया हूँ? उत्पत्ति 1:1-2:4क	70 मिनट
हमने मिलकर प्रार्थना की है।	एक दूसरे के लिए प्रार्थना	8 मिनट
मैं ने उन्हें एक निर्धारित काम दिया है।	अध्याय 5 के लिए निर्धारित कार्य	2 मिनट

5. जांच सूची।

- क्या मैंने कभी दूसरों को सलाह दी है(नीतिवचन 15:22;24:6)?
- क्या मैंने उस सहायक के साथ मिलकर योजना बनायी है, जिसकों मैं भविष्य में नया अगुवा बनाने के लिए प्रशिक्षित कर रहा हूँ?
- क्या परमेश्वर ने मेरी योजनाओं को स्वीकृत किया है(यशायाह 30:1-2; 2 कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 15:28)?
- क्या मैंने विकल्प के बारे में सोचा है?
- क्या मैंने अवसर पढ़ने पर संसाधनों का बेहतर ढंग से इस्तेमाल किया है?

5. कार्य सूची।

- अपने सहायक के साथ मिलकर अगले अध्याय के लिए क्रिया कलापों को तैयार करें।
- उस अध्याय के लिए सामग्री को इकट्ठा करें, जिसमें अध्याय की तैयारी से सम्बन्धित वह लिखित सामग्री भी शामिल है जिसे आप विद्यार्थियों के घर ले जाने के लिए देने वाले हैं।
- मेज़,कुर्सियों,प्रकाश, तापमान, सफेद बोर्ड व पैन तथा रबर (या श्यामपट व चौक),गीत की किताब,अतिरिक्त बाइबलों की, पेपर व पैन तथा पेयजल की व्यवस्था करें(या फिर इस जिम्मेदारी को अपने सहायक को सौंप दें।
- जो भी कुछ आप करते हैं उसे परमेश्वर की हाथों में सौंपें, और आपकी सारी योजनाएं सफल होगी(नीतिवचन 16:3)। समूह के सभी सदस्यों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। अपने सहायक के साथ मिलकर प्रार्थना करें। उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 1:9-12 में दी गयी प्रार्थना के समान प्रार्थना करें।